ब्रेख़्त के नाट्य सिद्धांत की रचनात्मक संवेदना

"उन जगहों को छाँटो जहां यथार्थ को झुठलाया जा रहा है, धकेला जा रहा है। ऊपरी चमक को कुरेदो! विरोध करो ! तुम्हारी दलीलें जीवित, व्यावहारिक और कार्यरत इंसान की यथावत जिंदगी है। निडर बनो, असली चीज सच्चाई है।" – बर्टोल्ट ब्रेख़्त

प्रदीप त्रिपाठी
सहायक प्रोफेसर
हिंदी विभाग
सिक्किम विश्वविद्यालय
गंगटोक
Email :
ptripathi@cus.ac.in

बर्टोल्ट बेख़्त रंगमंच की दुनिया के ऐसे सिद्धहस्त कलाकार हैं जिन्होंने अपने चिंतन एवं नए प्रयोगों के जरिए लगभग ढाई हजार से चले आ रहे पारंपरिक रंगमंच के सफ़र पर कई सवाल खड़े कर दिए। पहले यह माना जाता था कि नाटक में दर्शक की समरसता से उसे एक तन्मयता एवं आनंदावस्था प्राप्त होती है। दर्शक को सह-अनुभव से गुजारकर कुर्सी से चिपकाने की, उसे एक भ्रामक दुनिया में पहुंचाना कला-सौंदर्य के रस में डुबकियाँ लगवाने की कोशिश की जाती थी। ब्रेख्त ने इस प्रवृत्ति का विरोध किया। उनका मानना था कि सामाजिक जीवन के पारस्परिक मानव संबंधों को नाटक का विषय बनाना चाहिए साथ ही रंगमंचीय कला की दिशा में जटिल मानव समस्याओं के वर्गीय स्वरूप की पहचान करना, वर्गीय चेतना जगाना तथा उसके आधार पर नए जवाब एवं नए संकल्प सुझाने की तरफ होना चाहिए। गौरतलब है कि रंगमंच की दुनिया में जो स्थान ब्रेख़्त का है या ब्रेख्त की चर्चा जिस रूप में होनी चाहिए, अब तक नहीं हुई है। ब्रेख़्त के प्रतिरोध करने की शैली का अपना अलग अंदाज है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ब्रेख्त को नए सिरे से समझने एवं पुनर्मूल्यांकन करने की आवश्यकता है।

बदलते यथार्थ के साथ-साथ ब्रेख़्त ने अपनी कला के जरिए रंगमंच की ढांचीय बुनावट की नब्ज़ को पकड़ा। बेख़्त का मानना था कि जीवन संघर्ष का मजबूती से खुलकर सामना करना एवं समस्याओं को हल करने की दिशा में सोचने से ही सच्ची कला का सृजन होता है। मिसाल के तौर पर बेख़्त का प्रसिद्ध नाटक 'खड़िया का घेरा' उल्लेखनीय है। ब्रेख्त ने वस्तुतः यूरोपियन रंगमंच को यथार्थवाद के आगे का रास्ता दिखाया। उन्होंने रंगमंच को प्रतिरोध की नई ताकत मानते हुए हिस्ट्रीफिकेशन, एलिनेशन एवं इपिक थिएटर जैसे कई नए सिद्धांतों को प्रतिपादित किया। ब्रेख्त नाटक को हमेशा प्रदर्शन की तरह देखना चाहते थे , यथार्थ की तरह नहीं। वे चाहते थे अभिनेता, अभिनेता की तरह लगे, चरित्र की तरह नहीं। इसी धारणा के आलोक में ब्रेख़्त ने अभिनय के एलिनेशन सिद्धांत पर ज़ोर दिया जिसमें अभिनेता अपने चरित्र से दूर रहकर अभिनय करता था, वह एक साथ चरित्र भी था उसका आलोचक या व्याख्याकार भी। चरित्र से अलग रहकर अभिनय करने से चरित्र के अंतर्विरोध उजागर होते थे इसीलिए उन्होंने अभिनेता को चरित्र के मनोवैज्ञानिक व्यवहार की जगह सामाजिक व्यवहार खोजने की हिदायत दी। एक प्रकार से देखें तो ब्रेख्त अपने आप में रंगमंच की एक प्रयोगशाला थे। ब्रेख़्त ने भारतीय रंगमंच के समक्ष ऐसी अवधारणा प्रस्तुत की जो

अब तक के रंगमंच से सबसे अलग एवं नया प्रयोग था। वह अन्य रंगमंच से अलग इसलिए भी दिखाई पड़ते हैं क्योंकि उनके नाटकों में पहली बार वैचारिक प्रतिबद्धता के साथ-साथ सामाजिक एवं राजनीतिक स्वरूप दिखाई दिया। ब्रेख़्त का उद्देश्य एक ऐसे अलग रंगमंच की स्थापना का था जो राजनीतिक, निर्णायक एवं वर्णनात्मक हो। वर्णनात्मक से उनका तात्पर्य ऐसे नाटक से है जो पारंपरिक एवं सुगठित नाटकों से सर्वथा भिन्न हो। वह एक ऐसा उदाहरणयुक्त भाषण हो जिसका विषय राजनीतिक एवं सामाजिक हो। ब्रेख्त के रंगमंच की यह उपलब्धि रही कि उन्होंने शोषित एवं दमित वर्ग को अपने रंगमंच अथवा कथ्य का मुख्य विषय बनाया।

ब्रेख़्त के शब्दों में कहें तो "मनोरंजन के उद्देश्य के तहत यथार्थ या कल्पित घटनाओं के बीच मनुष्य के परस्पर संबंधों का चित्रण ही नाटक कहलाता है।"1 गौरतलब है ब्रेख़्त के समय में जर्मन रंगकर्म आत्ममुग्ध एवं बुर्जुआ प्रवृत्तियों का पक्षधर था, उस समय नाटकों में मानवीयता, महानता और उदात्तता की भावुक प्रवृत्तियों का ढोंग रचा जा रहा था। ऐसे समय में ब्रेख़्त की स्वीकारोक्ति थी कि नाटक का उद्देश्य मूलतया दर्शकों को आनंद प्रदान करना अथवा उनका मनोरंजन करना ही होता है परंतु वे बाद में जाकर इसकी पृष्ठभूमि में पुनः विचार करते हैं कि- "नाटकों का उद्देश्य सिर्फ़ मनोरंजन मात्र नहीं बल्कि वर्तमान समय और समाज से परिचय करवाना भी है। रंगमंच का काम दर्शकों के सामने सच्ची घटनाओं का भ्रम फैलाना है। इस कला में जो जितना सफल होता है वह उतना ही बड़ा रचनाकार होता है।"2 ब्रेख़्त ने अपने नाटकों के लिए जो विचारधारा प्रतिपादित की उसे इपीक थिएटर का नाम दिया। जागरूक अभिनय, भावहीन तटस्थ वृत्ति, आस-पास की नई और जटिल सामाजिक गतिविधियों का वर्णन और दुनिया को बदलने की इच्छा इन चार सूत्रों के आधार पर ब्रेख़्त के नाटक संबंधी विचार विकसित हुए। ब्रेख़्त ने इस थिएटर को 'थिएटर ऑफ सोशल एक्शन' के लिए बनाया। ब्रेख़्त ने अपने थिएटर को पारंपरिक थिएटर से अलग करने के लिए इपिक थिएटर का इस्तेमाल किया दूसरे शब्दों में कहें तो ड्रेमेटिक थिएटर के रूप के विरूद्ध ब्रेख़्त के थिएटर ने बगावत की। उनका मानना था कि 'ड्रेमेटिक फॉर्म ऑफ थिएटर' दर्शक को एक ऐसी भूमिका निभाने लिए मजबूर कर देता है जो दर्शक को कार्यान्वित (क्रियान्वित) करने के बजाय एक निष्क्रिय इकाई बनाकर छोड़ देता है। ब्रेख़्त ने अपनी इस अवधारणा के जरिए ऐतिहासिक विषयों को समकालीन संदर्भों से जोड़कर नई दृष्टि विकसित करने की कोशिश की। इस रंगमंच के द्वारा दर्शकों को यह समझाने की कोशिश थी कि अगर चीजें ऐसे घटित हुई तो वह घटनाक्रम गलत था और वैसा नहीं होना चाहिए था जबकि पारंपरिक थिएटर में वही प्रयोग इस प्रकार से होता था कि चीजें ऐसे ही चली आ रही हैं और यह घटनाक्रम भी गलत था अर्थात घटना भी सही नहीं है। पारंपरिक यथार्थवादी थिएटर अपनी प्रवृत्तियों में एक्शन को इस प्रकार की स्थिरता प्रदान करता है कि दर्शक को यह आभास होने लगता है कि नाटक जैसी परिस्थितियाँ वास्तव में बदली नहीं जा सकती।

ब्रेख़्त ने अपने रंगमंच का आधार कथनात्मक अथवा अ-नाटकीय ही माना। इपिक थिएटर का आधार ब्रेख़्त ने अलगाव और पृथकीकरण से जोड़ा। उन्होंने अपने रंगमंच के जरिए यह समझने का प्रयास किया कि दर्शकों को मंच पर यथार्थ को भ्रम के रूप में न दिखाकर मानव स्वभाव के एक नमूने के तौर पर पेश किया जा रहा है जो सिर्फ काल्पनिक यथार्थ है। उक्त संदर्भों के आलोक में वाल्टर बेंजामिन ने ब्रेख़्त के इपिक थिएटर पर टिप्पणी करते हुए कहा कि- "वह एक साथ दो तरह के प्रभाव छोड़ते हैं, ब्रेख़्त जहां नाटकीय तत्त्वों को ध्वस्त करते हैं वहीं वह दर्शक को सोचने के लिए मजबूर करने के साथ-साथ एक अलग किस्म का हास्य पैदा करके तनाव मुक्त भी करते हैं।"3 ब्रेख़्त के अनुसार जिस प्रकार दर्शक और नाटक में किसी प्रकार का तादात्मीकरण वांछनीय है ठीक उसी प्रकार कलाकार और पात्र में भी तादात्मीकरण नहीं होना चाहिए। जैसे गॉडो की भूमिका करने वाला अभिनेता यह सुनने के लिए बड़ा इच्छुक होता है कि 'तुम गॉडो का अभिनय नहीं कर रहे थे, तुम गॉडो ही लग रहे थे।' इस प्रकार की भावना वर्णनात्मक रंगमंच के लिए घातक है। अभिनेता को चाहिए कि वह पात्र से अपना तादात्मीकरण न होने दे। उसका तादात्म्य होते ही दर्शक का तादात्म्य उससे हो जाएगा। ब्रेख़्त के रंगमंच के संदर्भ में हबीब तनवीर की यह उक्ति बहुत ही सटीक प्रतीत होती है- "ब्रेख़्त आपको अपनी अस्मिता बनाए रखना सिखाते हैं इसीलिए अगर भारतीय नाटककार एक वास्तविक देशज रंगमंच विकसित करते हैं तो वह साथ ही साथ सचमुच ब्रेख़्तियन थिएटर भी होगा। दूसरे शब्दों में वह ऐसा रंगमंच होगा जो न केवल भारत की शास्त्रीय और लोक परंपरा को आत्मसात करने वाला हो जिसके मंचन में संगीत और नृत्य समाहित होंगे बल्कि वह साथ-साथ सार्वदेशिक भी होगा।"4 ब्रेख़्त ने अपने समय के रंगमंच को वास्तविकता के धरातल पर न सिर्फ चुनौती दी बल्कि रंगमंच की संरचना को तोड़ते हुए एक नई दृष्टि भी विकसित की।

लोक नाटकों में पहले से जो गीतों की परंपरा चली आ रही थी वह ब्रेख़्त के यहाँ जीवित मिलती है। ब्रेख़्त को इससे एक फायदा और मिला कि वह अपने नाटकों में सूत्रधार के माध्यम से कहानी को संक्षिप्त कर लिए। गौरतलब है, ब्रेख़्त के गीतों की एक -एक पंक्तियाँ अपने आप में व्यापक अर्थ-बोध लिए हुए होती हैं। मिसाल के तौर पर 'खड़िया का घेरा' की कुछ पंक्तियाँ देखी जा सकती हैं- "**गायक** : एक समय की बात बताऊँ/ बहुत पुरानी/ दिन थे भीषण मारकाट के/ रक्तपात के ! / बात पुरानी तब की/ जब यह शहर/ अभागों की बस्ती माना जाता था/ इसमें एक गवर्नर भी था/ नाम जार्जी आबाशविली था/ बात पुरानी बतलाता हूँ।"5 ब्रेख़्त ने अपने नाटकों में काव्यात्मक पक्ष पर अधिक ज़ोर दिया इसलिए उन्होंने अपने नाटकों में समूहगान का भरपूर इस्तेमाल किया। ब्रेख़्त इस बात से कभी सहमत नहीं थे कि रचनाओं में साहित्यिक मूल्यों की बलि दी जाय। उन्होंने नाटक के भीतर एक काल्पनिक नाटक खेलने की प्रक्रिया को पुनर्जीवित किया।

इसमें ब्रेख़्त ने अंधशक्तियों, पराशक्तियों, प्रतिबद्धता के नमूने, रंग-प्रयोग, रंग-संकेत एवं मुहावरों आदि का प्रयोग बड़े ही सजग ढंग से किया है। ब्रेख़्त के अनुसार दर्शक की भावनाएँ प्रेरित न करके इसे सोचने के लिए विवश करना चाहिए। ब्रेख़्त के विचार से नए रंगमंच को वाह्य यथार्थ के सत्यभास को प्रस्तुत करने की भावना को समाप्त कर देना है। दर्शकों को यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि वे नाटक में अपनी आंखों के समक्ष उसी क्षण घटने वाली जीवन की कुछ घटनाओं को ही नहीं देख रहे हैं बल्कि वे एक रंगशाला में बैठे हुए हैं और वृत्तान्त को सुन रहे हैं साथ ही उन घटनाओं को देख रहे हैं जो अतीत में किसी एक स्थान पर घटित हुई हैं।

हिस्ट्रीफिकेशन (ऐतिहासिकता का बोध) ब्रेख़्तियन रंगमंच के महत्वपूर्ण सिद्धांतों में से एक है। इसका आशय यह था कि रंगमंच में जो भी नाट्य-सामग्री इस्तेमाल की जाय वह वर्तमान से न होकर किसी अन्य समय अथवा स्थल से ली जाय। इस तरह के प्रयोग से दर्शक एवं मंच के बीच एक निश्चित दूरी बनाई जा सकती है जिससे दर्शक में विश्लेषण की शक्ति जाग सके। ब्रेख़्त का मानना था कि नाटककार का यह दायित्व होना चाहिए कि घटनाक्रम के अतीत पर ज़ोर देकर वर्तमान से दूरी कायम करते हुए दर्शक के लिए उस एक्शन में शामिल होने की संभावना को खत्म कर दे। अगर रंगमंच के माध्यम से यह संभव है तो ब्रेख़्त के अनुसार तब यह भी संभव है कि वर्तमान में भी सामाजिक स्तर पर उपयुक्त परिवर्तन लाए जा सकते हैं। ब्रेख़्त का रंगमंच सच्चे अर्थों में ऐतिहासिकता का रंगमंच है। वह हमेशा दर्शकों को इस बात का एहसास करवाता है कि वे सिर्फ अतीत की घटनाओं का एक वृत्तांत प्राप्त कर रहे हैं।

ब्रेख़्त का रंगमंच बहिर्मुखी है। ब्रेख़्त ने अपने नाटकों में पात्रों के आंतरिक जीवन से हटकर उनके पारस्परिक व्यवहारों एवं संबंधों पर ज़ोर दिया। 'खड़िया का घेरा' नाटक की पात्र ग्रूशा इस बात की सशक्त गवाह है। ब्रेख़्त ने अपनी रंगमंचीय युक्तियों के जरिए रंगमंच में ऐसे परिवर्तन लाए कि वर्तमान रंगमंच एक आदर्श रंगमंच के रूप में उभरे। रंगमंच की दुनिया में ब्रेख़्त के तमाम प्रयोगों में एलिनेशन (अलगाव) का सिद्धांत काफी चर्चा में रहा। ब्रेख़्त ने अपने रंगमंच में काल्पनिक पक्षों का इस्तेमाल सीमित रूप में इसलिए किया क्योंकि काल्पनिक स्थितियाँ दर्शक को जल्दी आकर्षित करती हैं। ब्रेख़्त ने पाने नाटकों में गीतों, नरेशन एवं फिल्मी क्लिप्स का प्रयोग करना शुरू कर दिया जिससे नाटकों में घटनाक्रम यथार्थ के साथ कभी दिग्भ्रमित न किए जाएँ। उन्होंने उपयोगिता के आधार पर सेट, शीन एवं डिजाइन की संरचना को तोड़ा जिससे दर्शक अपने आधार पर उस सारी व्यवस्था को समझे और अभिनेता पर सेट का अधिक दबाव न रहे।

ब्रेख़्त एक तटस्थ दृष्टि रखने वाले जागरूक कलाकार एवं नाट्य-सर्जक थे। रंगमंच के जरिए ब्रेख़्त ने दर्शक के अंदर ऐसी दृष्टि विकसित करने की कोशिश की जिससे दर्शक नाटक देखने के उपरांत दर्शक सोचे और सवाल किए बगैर न रहे साथ ही दर्शक ने मंच पर जो देखा उस पर अपना निर्णय दे। ब्रेख़्त ने स्पष्ट किया कि कला का महत्त्व तभी तक है जब तक कि मनुष्य जाति का अस्तित्व है। मनुष्य का अस्तित्व यदि समाप्त हो जाता है तो कला भी स्वयं नष्ट हो जाएगी। ब्रेख़्त की यही रचनात्मक संवेदना उन्हें

उन्हें रंगमंच की दुनिया में अन्य नाटककारों एवं कलाकारों से अलग करती है। ब्रेख़्त के शब्दों में कहें तो-

"लेखक उतनी जल्दी नहीं लिख सकते,

सरकारें जितनी जल्दी जंग कर सकती हैं

क्योंकि लेखन और कठिन वैचारिक प्रक्रिया है।"

संदर्भ सूची-

1. बेडेकर सुधीर. बार्टोल्ट ब्रेख़्त की नाट्य अवधारणा. (दिसंबर,2010). समकालीन भारतीय साहित्य. पृ. 193
2. वही, पृ. 192
3. वशिष्ठ, सुरेश. (1987). हिंदी नाटक और रंगमंच. पृ. 90
4. वही, पृ.82
5. ब्रेख़्त, बर्टोल्ट. (1970). खड़िया का घेरा. पृ. 23

सहायक ग्रंथ सूची

- बांदिवडेकर, चंद्रकांत. (2007). *मराठी साहित्य परिदृश्य*. नई दिल्ली : वाणी प्रकाशन.
- पटेल, किंगसन. (अतिथि संपादक). (अक्टूबर, 2010). *संवेद पत्रिका* (नारीवादी आलोचना की उलझने). अंक-10